खेल - आधारित शिक्षा

परिचय

इस लेख में हम, "खेल - आधारित शिक्षा" के बारे में समझेंगें। खेल की कई परिभाषाएँ है, जिनका मूल सार यह है कि यह बच्चों द्वारा की जाने वाली **स्वतंत्र, स्वाभाविक और रचनात्मक क्रिया है, जिसमें उन्हें आनंद मिलता हैं**। सभी बच्चे खेलते हैं । यह उनके लिए एक स्वाभाविक क्रिया है जिसके माध्यम से उनमें अपनी भौतिक-सामाजिक दुनिया की विशेषताओं को खोजने और सीखने की जिज्ञासा उत्पन्न होती है। विभिन्न प्रकार के खेल के माध्यम से बच्चों में नए –नए कौशल विकसित होते हैं।

खेल का महत्व[1]

खेल के माध्यम से बच्चों का सर्वांगीण विकास होता हैं, जो निम्न प्रकार से होते हैं –

शारीरिक विकास: खेल के दौरान बच्चे अपने हाथ, पैर, उँगलियों, धड़ और सिर हिलाते हैं, जिससे उन्हें अपनी मांसपेशियों को नियंत्रित करने में मदद मिलती हैं।

सामाजिक विकास: खेल के दौरान बच्चों में आत्मविश्वास, नेतृत्व, सही-गलत के बीच में अंतर करने जैसी कौशल विकसित होते हैं। साथ ही बच्चे दोस्त बनाने, अपनी बारी का इंतज़ार करने, सहयोग करने, अपने साथियों और वयस्कों का सम्मान करने आदि जैसे सामाजिक व्यवहार भी सीखते हैं।

भावनात्मक विकास: खेल के माध्यम से बच्चों को अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करने के अवसर मिलते है, जिसके अभ्यास से वे विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों में भी अपनी भावनाओं को सही प्रकार से नियंत्रित करने में सक्षम होते हैं।

संज्ञानात्मक विकास: खेल के माध्यम से बच्चों में निरीक्षण करने, ध्यान केन्द्रित करने, प्रयोग करने, समस्या समाधान करने, संवाद करने आदि के कौशल विकसित होते हैं।

रचनात्मक विकास: खेल बच्चों को अपनी कल्पना शक्ति को प्रयोग करने में प्रोत्साहित करतें है, जैसे नए रोल-प्ले करना, खेल का निर्माण करना आदि।

खेल के प्रकार[2]

बच्चों द्वारा किए जा रहे खेल के प्रकार को उनकी आयु, खेल की प्रकृति, बच्चों की रूचि और उनमें विकसित होने वाले कौशलों के आधार पर, अलग-अलग श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है:
खेल की प्रकृति और बच्चों में विकसित हो रही शारीरिक, संज्ञानात्मक और रचनात्मक कौशलों के आधार पर: [3]

- **फंक्शनल प्ले (functional play) –** यह खेल का पहला चरण है और इस प्रकार का खेल **जन्म से 2 वर्ष के आयु के बच्चों** द्वारा किया जाता है। इस प्रकार के खेल में बच्चे शारीरिक

---

[1] National Institute of Open Schooling. (n.d.). *Senior secondary course – Early Childhood Care and Education.* NIOS.
[2] National Institute of Open Schooling. (n.d.). *Senior secondary course – Early Childhood Care and Education.* NIOS.
[3] Jean Piaget (1945-1962) and Sara Smilansky (1968)

हरकतें करते है एवं स्पर्श और स्वाद जैसे इन्द्रियों का प्रयोग करते हैं। जैसे – हाथ-पैर को स्वतंत्र होकर चलाना, खिलौने/वस्तुएँ उठाकर मुँह में डालना आदि।

- **प्रीटेंड प्ले (pretend play) –** इस प्रकार का खेल **2 से 7 वर्ष की आयु के बच्चे** करते है। इसमें बच्चे रोल-प्ले और कहानी निर्माण के माध्यम से अपनी परिवेश की समझ को दर्शाते है। बच्चे कल्पना से अपनी आस-पास की वस्तुओं को किसी और वस्तु के रूप में प्रयोग करते है। जैसे – पेंसिल बॉक्स को फोन बनाना, फूल और पत्तियों को खाद्य पदार्थ का प्रतीक देना, दुपट्टे से घर बनाना आदि।
- **कंसट्रकटिव प्ले (constructive play) –** इस प्रकार के खेल में, बच्चे खिलौनों/वस्तुओं को जोड़कर, अपनी कल्पना से नई-नई चीजों का निर्माण करते हैं। इससे बच्चों की छोटे मांसपेशियों और रचनात्मक कौशलों का विकास होता हैं।
- **नियम वाले खेल –** इस प्रकार के खेल आम तौर पर, लक्ष्य आधारित होते है, जिसके प्राप्ति के लिए कुछ नियमों का पालन करना परता है। इस प्रकार के खेल में, बच्चे नियमों को समझने, उनका अनुपालन और हार-जीत के अवधारणाओं को समझना शुरू करते हैं। *प्री-स्कूल में सरल नियमों वाले खेल खिलाये जाते है।* जैसे – दौड़ प्रतियोगिता आदि।

सामाजिक कौशलों पर आधारित[4]: बच्चों द्वारा एक दूसरे के साथ परस्पर संबंध के आधार पर खेल के निम्नलिखित प्रकार है –

- **अनओकक्यूपाईड प्ले (unoccupied play) –** इस प्रकार का खेल जन्म से 3 महीने के बच्चों में देखा जाता है, जिसके दौरान बच्चे किसी अन्य व्यक्ति के साथ नहीं खेलते हैं। इसमे वे अपने संवेदों के प्रयोग से अपने आस-पास के परिवेश को समझने की कोशिश करते है। जैसे – हवा में हाथ-पैर चलाते है, आदि।
- **सौलिटरी प्ले (solitary play) –** इस प्रकार के खेल में बच्चे अकेले खेलना पसंद करते है। वे दूसरे बच्चों के साथ ना खिलौने साझा करते हैं और ना ही उनके साथ खेलने में रूचि रखते हैं। इस प्रकार का खेल जन्म से 2 वर्ष के बच्चों में देखा जाता है।
- **ऑनलूकर प्ले (onlooker play) –** इसमें बच्चे पास में खेल रहे दूसरे बच्चों को देखते है, लेकिन उनके साथ खेल में प्रतिभाग नहीं करते। वे उन बच्चों के साथ बातचीत करते है, जैसे खेल के बारे में पूछना या खेल के नियमों को समझना।
- **पैरलल प्ले (parallel play) –** इस प्रकार के खेल में, दो बच्चे पास-पास बैठकर अपने-अपने खिलौनों के साथ खेलते है, लेकिन एक दूसरे से बातचीत नहीं करते है। वे एक दूसरे के द्वारा किए जा रहे क्रियाओं को देखकर, नकल करने की कोशिश कर सकते है। इस प्रकार का खेल जन्म से 2-3 वर्ष के बच्चों में देखा जाता है।
- **असोसिएटिव प्ले (associative play) –** इस प्रकार के खेल में, बच्चे अन्य बच्चों के साथ खेलने में आनंद लेते है, लेकिन उनके खेल का कोई सामान्य लक्ष्य नहीं होता है।
- **कोओपरटिव प्ले (cooperative play) –** इस प्रकार के खेल में बच्चे, एक सामान्य लक्ष्य के लिए, एक दूसरे के साथ मिलकर खेलते है। इसमें सभी बच्चे एक टीम के रूप में खेलते है, जिसके दौरान उनमें व्यवस्थित रूप से खेलने के कौशल विकसित होते हैं। इस प्रकार का खेल जन्म से 4+ वर्ष के बच्चों में देखा जाता है।

[4] Mildred Parten Newhall (1929)

बताए गए सभी प्रकार के खेल को दो व्यापक समूहों में बाँटा जा सकता है –

- **संरचित खेल (structured play)** –इस खेल में खेल के नियम, लक्ष्य, व बच्चों के विकास के लक्ष्य खेल खेलने से पहले ही कार्यकत्री द्वारा निर्धारित होते हैं । जैसे - पज़ल से संज्ञानात्मक कौशलों का विकास होता हैं, टीम आधारित खेल से बच्चों में सामाजिक कौशल विकसित होते हैं। नियम वाले खेल और कोओपरटिव प्ले, इस प्रकार के खेल के भी उदाहरण है।
- **असंरचित खेल (unstructured play) –** इस खेल में पहले से निर्धारित लक्ष्य नहीं होते हैं। इस प्रकार के खेल में, बच्चे किसी पूर्व-निर्धारित विशिष्ट नियम या परिणाम से बंधे नहीं होते हैं, और वे स्वयं खेल की रचना करते हैं, जैसे – प्रीटेंड प्ले, मुक्त चित्रकारी आदि।

आंगनवाड़ी केंद्र में खेल और खेल आधारित गतिविधि के बीच में अंतर

प्री-स्कूल शिक्षा के शिक्षण प्रणाली में, खेल एवं खेल आधारित गतिविधियाँ संचालित की जाती है। दोनों प्रक्रियाओं में, बच्चों के सीखने और सर्वांगीण विकास हेतु, खेल सामग्रियों का प्रयोग किया जाता है। खेल और खेल आधारित गतिविधियों के बीच मुख्य अंतर, आंगनवाड़ी कार्यकत्री और बच्चों की भूमिका में निहित हैं।

खेल	**खेल आधारित गतिविधि**
• असंरचित खेल : बच्चों द्वारा, अपनी रूचि और कल्पना के अनुसार, स्वयं संचालित किया जाता है। • आंगनवाड़ी कार्यकत्री की भूमिका, एक प्रेक्षक या साथी के रूप में हैं। • बच्चों के सीखने और विकास मे प्रगति का स्तर, उनके स्वाभाविक जिज्ञासा, रचनात्मकता, रूचि और खोज करने की क्षमता से प्रभावित होती है *आंगनवाड़ी केंद्र पर खेल कब होता हैं ?-* – दूसरे सत्र में सीखने के कोनों में "स्वतंत्र खेल" के समय – तीसरे सत्र में "बच्चों द्वारा निर्मित या संचालित किए गए बाहरी खेल" के दौरान – पूरे दिन के दौरान बच्चों द्वारा स्वयं पहल की गई बातचीत, गतिविधि, भावगीत आदि	• संरचित खेल: कार्यकत्री के निर्देशों के अनुसार संचालित किया जाता है। • बच्चे बताए गए कार्य और निर्देशों का पालन करते हैं। • कार्यकत्री बच्चों को उनके आयु के अनुसार सीखने और विकासात्मक लक्ष्यों को प्राप्त करने मदद करतीं हैं। *आंगनवाड़ी केंद्र पर खेल आधारित गतिविधि कब होती हैं ?* – प्रथम सत्र की गतिविधियों के दौरान – दूसरे सत्र में "निर्देशित गतिविधियों" के समय – तीसरे सत्र में "नियम आधारित या सामूहिक बाहरी खेल" के दौरान – चौथे सत्र में "विद्यालय की तैयारी" की गतिविधियाँ , संरचित रचनात्मक गतिविधियाँ जैसे "ओरिगामी"

दोनों प्रक्रियाओं के संतुलित क्रियान्वयन से, बच्चों के सीखने और उनके विकासात्मक कौशलों में वृद्धि के अवसरों को बढ़ाता है।